( अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब ''ग़ीबत की तबाह कारियां''
से लिये गए मवाद की सातवीं क़िस्त )

Meethi Zabaan (Hindi)

# मीठी ज़बान

कुल सफ़हात 24

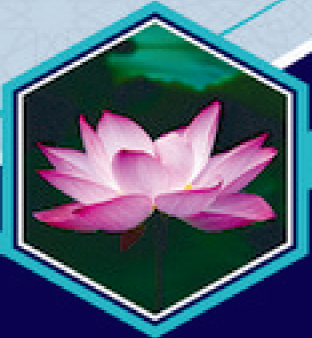

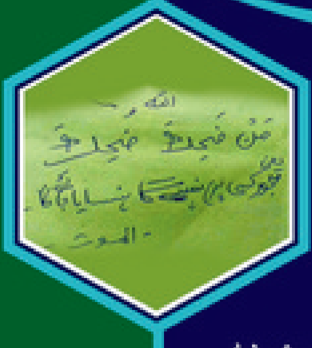

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

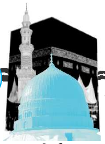

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

# किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ

**दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افۡتَحۡ عَلَیۡنَا حِکۡمَتَکَ وَانۡشُرۡ
عَلَیۡنَا رَحۡمَتَکَ یَا ذَاالۡجَلَالِ وَالۡاِکۡرَام

**तरजमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج١ ص٤٠ دارالفکر بیروت)

**नोट :** अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

---

## मीठी ज़बान

येह रिसाला (**मीठी ज़बान**)

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

**राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट** (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hindibook@dawateislamihind.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

यह मज़्मून "ग़ीबत की तबाहकारियां" के सफ़हा 147 ता 160 से लिया गया है।

# मीठी ज़बान

**दुआए अत्तार**

या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई रिसाला "**मीठी ज़बान**" के 23 सफ़्हात पढ़ या सुन ले उसे दिल आज़ार तीखे लहजे से बचा कर दिलों में खुशियां दाख़िल करने वाली मीठी ज़बान अ़ता फ़रमा। आमीन

## दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सो मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पाक उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत **शुहदा** के साथ रखेगा। (مُعْجَم اَوْسَط ج۵ ص۲۵۲ حدیث۷۲۳۵)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

**काश मैं दरख़्त होता ! : ऐ आ़शिक़ाने रसूल !** आ़लिमे दीन की शाने अ़ज़्मत निशान में बे अदबी से बचना बहुत ज़रूरी है। ख़ुदा न ख़्वास्ता कोई ऐसी भूल हो गई जिस से ईमान से हाथ धोना पड़ गया तो **ख़ुदा की क़सम !** बहुत रुस्वाई होगी कि बरोज़े क़ियामत काफ़िरों को मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में झोंक दिया जाएगा जहां उन्हें हमेशा हमेशा अ़ज़ाब में रहना पड़ेगा। **अल्लाह** पाक हमें ज़बान की लग़्ज़िशों से भी बचाए और हमारे ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमाए। आमीन। हमारे

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان क़ब्रो आख़िरत के मुआ़मले में **अल्लाह** पाक से बहुत डरते थे, ग़लबए ख़ौफ़ के वक़्त इन ह़ज़रात की ज़बान से बसा अवक़ात इस त़रह़ के कलिमात अदा होते थे : काश ! हमें दुन्या में बत़ौरे इन्सान न भेजा जाता कि इन्सान बन कर दुन्या में आने के बाइ़स अब ख़ातिमा बिल ईमान, क़ब्र व क़ियामत के इम्तिह़ान वग़ैरा के कठिन मराह़िल दरपेश हैं । एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने ख़ौफ़े ख़ुदा में डूब कर फ़रमाया : अगर तुम वोह जान लो जो मौत के बा'द होना है तो तुम पसन्दीदा खाना पीना छोड़ दो, सायादार घरों में न रहो बल्कि वीरानों का रुख़ कर जाओ और तमाम उ़म्र आहो ज़ारी में बसर कर दो इस के बा'द फ़रमाने लगे : **काश ! मैं दरख़्त होता जिसे काट दिया जाता ।** (اَلزُّھد لِلامام اَحمد بن حنبل ص ۱۶۲ رقم ۷٤۰)

***मैं बजाए इन्सां के कोई पौदा होता या नख़्ल[1] बन के त़यबा के बाग़ में खड़ा होता***

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 159)

**काश मुझे ज़ब्ह़ कर दिया जाता : इब्ने अ़साकिर** ने "तारीख़े दिमश्क़" जिल्द 47 सफ़ह़ा 193 पर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से येह कलिमात नक़्ल किये हैं : **काश !** मैं दुम्बा होता, मुझे किसी मेहमान के लिये ज़ब्ह़ कर दिया जाता, मुझे खाते और खिला देते ।

***जां कनी[2] की तक्लीफ़ें ज़ब्ह़ से हैं बढ़ कर काश ! मुर्ग़ बन के त़यबा में ज़ब्ह़ हो गया होता***

***मर्ग़ज़ारे[3] त़यबा का काश होता परवाना गिर्दे शम्अ़ फिर फिर कर काश ! जल गया होता***

***काश ! ख़र[4] या ख़च्चर या घोड़ा बन कर आता और***

***आप ने भी खूंटे से बांध कर रखा होता***

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 160)

---

1. खजूर का दरख़्त, आ़म दरख़्त, 2. नज़्अ़ का आ़लम, इन्सान की रूह़ निकलने का अ़मल, 3. सब्ज़ा ज़ार 4. गधा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى الله ! اَسْتَغْفِرُ الله
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

**आह ! मेरे गुनाह !! : ऐ आ़शिक़ाने रसूल !** उ़लमाए किराम का मक़ाम समझने, इन के एह़तिराम का जज़्बा पाने, **ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **मदनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **मदनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत उठाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) भी है। इन में क़ुरआने करीम पढ़िये अगर पढ़े हुए हैं तो पढ़ाइये। आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये अ़र्ज़ है, एक इस्लामी भाई गुनाहों भरे मुख़्तलिफ़ मुआ़मलात में मसरूफ़ रहा करते थे। जिन में مَعَاذَ الله V.C.R की लीड सप्लाय करना, रातों को औबाश लड़कों के साथ घूमना, रोज़ाना दो बल्कि तीन तीन फ़िल्में देखना, वेरायटी प्रोग्राम्ज़ में रातें काली करना शामिल था। اَلْحَمْدُ لِلّٰه एक इस्लामी भाई की मुसल्सल **इन्फ़िरादी कोशिश** की बरकत से अ़लाक़े के **मद्रसतुल मदीना** (बराए बालिग़ान) में उन की जाने की तरकीब बनी, और इस त़रह़ आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत मिली और वोह आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक,

**दा'वते इस्लामी** के **मदनी माह़ोल** से वाबस्ता हो कर मदनी कामों में मसरूफ़ हो गए ।

*सिखाता है हर दम सदा मदनी माह़ोल हमें आ़लिमों और बुज़ुर्गों के आदाब*
*है बेह़द मह़ब्बत भरा मदनी माह़ोल हैं इस्लामी भाई सभी भाई भाई*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 647)

**ता'लीमे क़ुरआन के दो² फ़ज़ाइल : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** اَلْحَمْدُ لِلّٰہ उ़मूमन रोज़ाना इशा के बा'द हज़ारहा **मद्रसतुल मदीना** क़ाइम किये जाते हैं जहां फ़ी सबीलिल्लाह **क़ुरआने करीम** की ता'लीम दी जाती है । ता'लीमे क़ुरआने करीम के फ़ज़ाइल के क्या कहने ! चुनान्चे **आ़शिक़ाने रसूल** की मदनी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** की किताब, **"बहारे शरीअ़त"** हिस्सा 16 (312 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 127 से **दो फ़रामीने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा हों : ﴾1﴿ तुम में बेहतर वोह शख़्स है, जो क़ुरआन सीखे और सिखाए । (بُخاری ج۳ص۴۱۰ حدیث ۵۰۲۷) ﴾2﴿ जो क़ुरआन पढ़ने में माहिर है, वोह किरामन कातिबीन के साथ है और जो शख़्स रुक रुक कर क़ुरआन पढ़ता है और वोह उस पर शाक़ है (या'नी उस की ज़बान आसानी से नहीं चलती, तक्लीफ़ के साथ अदा करता है) उस के लिये दो अज्र हैं । (صَحیح مُسلِم ص۴۰۰ حدیث۷۹۸)

*येही है आरज़ू ता'लीमे क़ुरआं आ़म हो जाए*
*हर इक परचम से ऊंचा परचमे इस्लाम हो जाए*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

**गुस्ताख़े रसूल का अन्जाम : ऐ आ़शिक़ाने रसूल !** अगर **ग़ीबत** की कसरत के सबब रब्बुल इ़ज़्ज़त नाराज़ हुवा और हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रूठ गए और ईमान बरबाद हो गया और कोई बद नसीब مَعَاذَاللّٰه **काफ़िर** हो कर मरा तो ख़ुदा की क़सम कहीं का न रहेगा। कुफ़्र पर मरने वाला हमेशा हमेशा जहन्नम में रहेगा, काफ़िरों के अन्जाम के बारे में मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का इर्शाद पढ़िये और तौबा तौबा कीजिये और अपने ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये ख़ूब कुढ़िये चुनान्चे **आ़शिक़ाने रसूल** की मदनी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** कि किताब **"मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत"** (502 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 147 पर है : एक मर्तबा आ़स (जो कि बहुत बड़ा गुस्ताख़े रसूल काफ़िर था वोह) सफ़र को गया। तकान (या'नी थकन) के बाइ़स एक दरख़्त से तकिया (या'नी टेक) लगा कर बैठ गया। जिब्रईले अमीन (عَلَيْهِ السَّلَام) ब हुक्मे रब्बुल आ़लमीन तशरीफ़ लाए और उस का सर पकड़ कर दरख़्त से **टकराना** शुरूअ़ किया। वोह चिल्लाता था कि अरे कौन मेरे सर को दरख़्त से टकरा रहा है ? उस के साथी कहते थे कि हमें कोई नज़र नहीं आता। यहां तक कि **जहन्नम** वासिल हुवा (या'नी मर कर जहन्नम पहुंचा)। **क़ियामत** के दिन अबू जह्ल जहन्नमी की सब से जुदा **ह़ालत** होगी : येह अपने आप को مَعَاذَاللّٰه "अ़ज़ीज़ व करीम" कहा करता या'नी इ़ज़्ज़त वाला व करम वाला। **दारोग़ए दोज़ख़** (या'नी दोज़ख़ के निगरान फ़िरिश्ते) को हुक्म होगा कि इस के सर पर **गुर्ज़** मारो ! जिस के लगते ही एक बड़ा **ख़ला** (बहुत बड़ा गढ़ा) सर में हो जाएगा और जिस की वुस्अ़त इतनी न होगी जितनी तुम

ख़याल करते हो बल्कि जिस की एक **दाढ़** कोहे उहुद (या'नी उहुद पहाड़) के बराबर होगी उस के सर फटने से जो **ख़ला** (गढ़ा) होगा वोह किस क़दर **वसीअ़** होगा ! ग़रज़ उस **ख़ला** (गढ़े) में जहन्नम का खौलता हुवा पानी भरा जाएगा और उस से कहा जाएगा :

ذُقۡ ۚ اِنَّكَ اَنۡتَ الۡعَزِيۡزُ الۡكَرِيۡمُ ﴿۴۹﴾ (پ۲۵ الدخان ۴۹)

**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** चख तू तो इज़्ज़त व करम वाला है ।

और काफ़िर को येही पानी पिलाया जाएगा कि जब मुंह के क़रीब आएगा मुंह उस में **गल** कर गिर पड़ेगा और जब पेट में उतरेगा, **आंतों के टुकड़े** कर देगा, और उस पानी को ऐसा पियेंगे जैसे तोंस (या'नी न बुझने वाली प्यास) के मारे ऊंट । भूक से बेताब होंगे तो **ख़ारदार थूहड़**[1] खौलता हुवा, चर्ख़ दिये (या'नी पिघले) हुए तांबे की त़रह़ उबलता हुवा खिलाएंगे जो पेट में जा कर खौलते हुए पानी की त़रह़ **जोश** मारेगा और भूक को कुछ फ़ाएदा न देगा । अन्वाअ़ अन्वाअ़ (या'नी त़रह़ त़रह़) के अ़ज़ाब होंगे । हर त़रफ़ से मौत आएगी और **मरेंगे** कभी नहीं, न कभी उन के अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ (या'नी कमी) होगी ।

*ख़ुदाया बुरे ख़ातिमे से बचाना  पढ़ूं कलिमा जब निकले दम या इलाही*
*गुनाहों से भरपूर नामा है मेरा  मुझे बख़्श दे कर करम या इलाही*

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 110)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صلَّی اللّٰہُ علٰی مُحمَّد
تُوبُوا اِلَی اللّٰہ ! اَسۡتَغۡفِرُ اللّٰہ
صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صلَّی اللّٰہُ علٰی مُحمَّد

मदीना

1. एक ख़ारदार ज़हरीला पौदा जिस के पत्ते सब्ज़ और फूल रंग बिरंगे होते हैं ।

**गर्मियों में रोज़ा आसान मगर चुप रहना मुश्किल :** जिन लोगों की ज़बान क़ैंची की त़रह़ चलती रहती है वोह झूट, **ग़ीबत**, तोहमत और चुग़ली वग़ैरा आफ़तों में अक्सर मुब्तला होते रहते हैं, वाक़ेई **ज़बान** पर **क़ुफ़्ले मदीना** लगाना या'नी इस को क़ाबू में रखना निहायत ज़रूरी है अगर्चे येह मुश्किल ही सही मगर कोशिश करेंगे तो **अल्लाह** करीम आसानी कर देगा । **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ **"मिन्हाजुल आ़बिदीन"** में नक़्ल करते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस बिन उ़बैदुल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मेरा नफ़्स बसरा जैसे गर्म शह्‌र के अन्दर और वोह भी सख़्त गर्मियों में रोज़ा रखने की तो क़ुव्वत रखता है मगर **फ़ुज़ूल गोई** से ज़बान को रोकने की त़ाक़त नहीं रखता ! (مِنھاجُ العابِدین (عربی) ص ٦٤) अगर इन **तीन उसूलों** को पेशे नज़र रख लिया जाए तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ बड़ा नफ़्अ़ होगा : ﴾1﴿ बुरी बात कहना हर ह़ाल में बुरा है ﴾2﴿ फ़ुज़ूल बात से ख़ामोशी अफ़्ज़ल है ﴾3﴿ भलाई की बात करना ख़ामोशी से बेहतर है ।

***मेरी ज़बान पे क़ुफ़्ले मदीना लग जाए फ़ुज़ूल गोई से बचता रहूं सदा या रब !***
***करें न तंग ख़यालाते बद कभी कर दे शुऊ़रो फ़िक्र को पाकीज़गी अ़त़ा या रब !***
***ब वक़्ते नज़्अ़ सलामत रहे मेरा ईमां***
***मुझे नसीब हो तौबा है इल्तिजा या रब !***

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 83,78,87)

**जिगर का केन्सर ठीक हो गया : ज़बान** पर क़ुफ़्ले मदीना लगाने का ज़ेह्‌न बनाने, **ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत मिटाने, नमाज़ों

और सुन्नतों पर अ़मल का जज़्बा बढ़ाने के लिये **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **मदनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये और काम्याब ज़िन्दगी गुज़ारने और आख़िरत संवारने के लिये **मदनी इन्आ़मात** के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये और जहां कहीं "**दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत**" होता देखें उस में ख़ुशदिली के साथ ब निय्यते सवाब ज़रूर शिर्कत फ़रमाएं नीज़ हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की ह़ाज़िरी किसी सूरत में भी तर्क न फ़रमाएं, आप की तरग़ीब के लिये एक ईमान अफ़रोज़ मदनी बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं। एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : मैं ने एक ऐसे इस्लामी भाई को मदीनतुल औलिया में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के **बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे तीन दिन के इज्तिमाअ़** की दा'वत पेश की जिन की बेटी को **जिगर का केन्सर** था। वोह दुआ़ए शिफ़ा करने का जज़्बा लिये सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शरीक हो गए। उन्हों ने इज्तिमाए़ पाक में ख़ूब दुआ़ की। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ **वापसी के बा'द जब अपनी बेटी का चेकअप करवाया तो येह देख कर डॉक्टर ह़ैरानो शश्दर रह गए कि उस के जिगर का केन्सर ख़त्म हो चुका था !** डॉक्टरों की पूरी टीम वर्त़ए ह़ैरत में डूबी हुई थी कि आख़िर केन्सर गया कहां ! जब


www.dawateislami.net

कि इज्तिमाए़ पाक में जाने से पहले मरीज़ा की ह़ालत इस क़दर ख़राब थी कि उस के जिगर से रोज़ाना कम अज़ कम एक सिरिन्ज भर कर मवाद निकाला जाता था ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ इज्तिमाए़ पाक में शिर्कत की बरकत से अब उस लड़की के जिगर में **केन्सर** का नामो निशान तक न रहा था, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ता दमे बयान वोह लड़की अब न सिर्फ़ रू ब सिह़्ह़त है बल्कि उस की शादी भी हो चुकी है।

***अगर दर्दे सर हो, कहीं केन्सर हो — दिलाएगा तुम को शिफ़ा मदनी माह़ोल***
***शिफ़ाएं मिलेंगी, बलाएं टलेंगी — यक़ीनन है बरकत भरा मदनी माह़ोल***

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 648)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

**कोई मरज़ ला इलाज नहीं : ऐ आ़शिक़ाने रसूल !** देखा आप ने ! सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की बरकत से डॉक्टरों के बक़ौल ला इलाज माना जाने वाला केन्सर भी ठीक हो गया, ह़क़ीक़त येह है कि कोई मरज़ ऐसा नहीं जिस की दवा न हो चुनान्चे **आ़शिक़ाने रसूल** की मदनी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** की किताब, "**घरेलू इलाज**" (114 सफ़्ह़ात) सफ़्ह़ा 7 पर है : **अल्लाह** पाक के ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सिह़्ह़त निशान है : हर बीमारी की दवा है, जब दवा बीमारी तक पहुंचा दी जाती है तो **अल्लाह** पाक के हुक्म से मरीज़ अच्छा हो जाता है। (صَحِیح مُسلِم ص ۱۲۱۰ حدیث ۲۲۰۴)

**केन्सर के दो इलाज :** ﴾1﴿ पिसा हुवा **काला ज़ीरा** तीन तीन ग्राम दिन में तीन मर्तबा पानी से इस्ति'माल कीजिये ﴾2﴿ रोज़ाना चुटकी भर पिसी हुई ख़ालिस **हलदी** खाने से اِنْ شَآءَاللہ कभी **केन्सर** नहीं होगा।

**ग़ीबत के मुख़्तलिफ़ तरीक़े : ऐ आशिक़ाने रसूल ! ग़ीबत** सिर्फ़ ज़बान ही से नहीं और तरीक़ों से भी की जा सकती है मसलन ﴾1﴿ इशारे से ﴾2﴿ लिख कर ﴾3﴿ मुस्कुरा कर (मसलन आप के सामने किसी की ख़ूबी, बयान हुई और आप ने तन्ज़िया अन्दाज़ में मुस्कुरा दिया जिस से ज़ाहिर होता हो कि "तुम भले ता'रीफ़ किये जाओ, मैं इस को ख़ूब जानता हूं !") ﴾4﴿ दिल के अन्दर **ग़ीबत** करना या'नी **बद गुमानी** को दिल में जमा लेना। मसलन बिग़ैर देखे बिला दलील या बिग़ैर किसी वाज़ेह क़रीने के ज़ेह्न बना लेना कि "फ़ुलां में वफ़ा नहीं है।" या "फ़ुलां ने ही मेरी चीज़ चुराई है" या "फ़ुलां ने यूंही गप लगा दिया है" वग़ैरा ﴾5﴿ अल ग़रज़ हाथ, पाउं, सर, नाक, होंट, ज़बान, आंख, अब्रू, पेशानी पर बल डाल कर या लिख कर, फ़ोन पर SMS कर के, इन्टरनेट पर चेटिंग के ज़रीए, बर्क़ी डाक (या'नी EMAIL) से या किसी भी अन्दाज़ से किसी के अन्दर मौजूद बुराई या ख़ामी दूसरे को बताई जाए वोह **ग़ीबत** में दाख़िल है।

**मोमिनों पर तीन एह्सान करो ! : हज़रते** सय्यिदुना यह्या बिन मुआज़ राज़ी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : तुम से मोमिनों को अगर तीन फ़वाइद हासिल हों तो तुम मोह्सिनीन (या'नी एह्सान करने वालों) में शुमार किये जाओगे ﴾1﴿ अगर इन्हें नफ़्अ़ नहीं पहुंचा सकते तो नुक़्सान

भी न पहुंचाओ ﴾2﴿ इन्हें ख़ुश नहीं कर सकते तो रन्जीदा भी न करो ﴾3﴿ इन की ता'रीफ़ नहीं कर सकते तो बुराई भी मत करो। (تَنبِيهُ الْغافِلين ص٨٨)

**मुसल्मान की भलाई बयान करने वालों के लिये फ़िरिश्तों की दुआ :** मश्हूर ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه (जिन का 103 सि. हि. में मक्कए मुअ़ज़्ज़मा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيمًا में सज्दे की ह़ालत में विसाल हुवा) फ़रमाते हैं : जब कोई शख़्स अपने इस्लामी भाई का भलाई के साथ ज़िक्र करता है तो उस के साथ रहने वाले फ़िरिश्ते उसे दुआ़ देते हैं कि "तुम्हारे लिये भी इस की मिस्ल हो" और जब कोई अपने भाई को बुराई (या'नी ग़ीबत वग़ैरा) से याद करता है तो फ़िरिश्ते कहते हैं : तूने उस की पोशीदा बात ज़ाहिर कर दी ! ज़रा अपनी त़रफ़ देख और **अल्लाह** पाक का शुक्र कर कि उस ने तेरा पर्दा रखा हुवा है। (تَنبِيهُ الْغافِلين ص٨٨)

*मुजरिम हूं दिल से ख़ौफ़े क़ियामत निकाल दो*
*पर्दा गुनहगार पे दामन का डाल दो*

**मीठे बोल की मीठी ह़िकायत : ऐ आ़शिक़ाने रसूल !** देखा आप ने ! मुसल्मान के बारे में भलाई वाला **मीठा बोल** बोलने वाले को फ़िरिश्ते दुआ़ए ख़ैर से नवाज़ते हैं और **ग़ीबत** वग़ैरा करने वालों को तम्बीह करते हैं लिहाज़ा हमें हमेशा ज़बान से **मीठा बोल** अदा करने की सअ़्य करनी चाहिये और **मीठा बोल** तो फिर **मीठा बोल** है इस की मिठास वोह रंग लाती है कि अ़क़्लें दंग रह जाती हैं ! इस ज़िम्न में एक **ह़िकायत** सुनिये और झूमिये चुनान्चे **ख़ुरासान** के एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

को ख़्वाब में हुक्म हुवा : "तातारी क़ौम में इस्लाम की दा'वत पेश करो !" उस वक़्त **हलाकू** का बेटा तगूदार बर सरे इक़्तिदार था। वोह **बुज़ुर्ग** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه सफ़र कर के तगूदार के पास तशरीफ़ ले आए। सुन्नतों के पैकर बा रीश मुसल्मान मुबल्लिग़ को देख कर उसे मस्ख़री सूझी और कहने लगा : "मियां ! येह तो बताओ तुम्हारी दाढ़ी के बाल अच्छे या मेरे कुत्ते की दुम ?" बात अगर्चे ग़ुस्सा दिलाने वाली थी मगर चूंकि वोह एक समझदार मुबल्लिग़ थे लिहाज़ा निहायत नरमी के साथ फ़रमाने लगे : "मैं भी अपने ख़ालिक़ व मालिक **अल्लाह** पाक का कुत्ता हूं अगर जां निसारी और वफ़ादारी से उसे ख़ुश करने में काम्याब हो जाऊं तो मैं अच्छा वरना आप के कुत्ते की दुम ही मुझ से अच्छी" चूंकि वोह एक बा अमल मुबल्लिग़ थे **ग़ीबत** व चुग़ली, ऐबजूई और बद कलामी नीज़ फ़ुज़ूल गोई वग़ैरा से दूर रहते हुए अपनी ज़बान **ज़िक्रुल्लाह** से हमेशा तर रखते थे लिहाज़ा उन की ज़बान से निकले हुए **मीठे बोल** तासीर का तीर बन कर तगूदार के दिल में पैवस्त हो गए कि जब उस ने अपने "ज़हरीले कांटे" के जवाब में उस बा अमल मुबल्लिग़ की तरफ़ से "ख़ुश्बूदार **मदनी फूल**" पाया तो पानी पानी हो गया और नरमी से बोला : आप (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) मेरे मेहमान हैं मेरे ही यहां क़ियाम फ़रमाइये। चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه उस के पास मुक़ीम हो गए। **तगूदार** रोज़ाना रात आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में हाज़िर होता, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه निहायत ही शफ़्क़त के साथ उसे **नेकी की दा'वत** पेश करते। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की **इन्फ़िरादी कोशिश** ने तगूदार के दिल में **मदनी इन्क़िलाब** बरपा कर

दिया ! वोही **तगूदार** जो कल तक **इस्लाम को सफ़्हए** हस्ती से मिटाने के दर पै था आज **इस्लाम का शैदाई** बन चुका था। उसी **बा अ़मल मुबल्लिग़** के हाथों **तगूदार** अपनी पूरी तातारी क़ौम समेत मुसल्मान हो गया। उस का इस्लामी नाम **अह़मद** रखा गया। तारीख़ गवाह है कि एक मुबल्लिग़ के **मीठे बोल** की बरकत से वस्ते एशिया की ख़ूंख़ार तातारी सल्त़नत इस्लामी हुकूमत से बदल गई। **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

**मीठी ज़बान : प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ? मुबल्लिग़ हो तो ऐसा ! अगर **तगूदार** के तीखे जुम्ले पर वोह बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ गुस्से में आ जाते तो हरगिज़ येह **मदनी नताइज** बरआमद न होते। लिहाज़ा कोई कितना ही ग़ुस्सा दिलाए हमें अपनी **ज़बान** को क़ाबू में ही रखना चाहिये कि जब येह बे क़ाबू हो जाती है तो बा'ज़ अवक़ात बने बनाए खेल भी बिगाड़ कर रख देती है। **मीठी ज़बान** ही तो थी कि जिस की शीरीनी और चाश्नी ने **तगूदार** जैसे वह़शी और ख़ूंख़ार इन्साने बद तर अज़ हैवान को इन्सानिय्यत के बुलन्दो बाला मन्सब पर फ़ाइज़ कर दिया।

*है फ़लाह़ो कामरानी नरमी व आसानी में*

*हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में*

**ज़िक्रो दुआ़ के अन्दाज़ पर ग़ीबत : ह़ुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने **एह़याउल**

**उ़लूम** जिल्द 3 में सब से बद तरीन **ग़ीबत** का तज़्किरा करते हुए जो कुछ फ़रमाया है उस की रोशनी में अ़र्ज़ करने की सअ़्य करता हूं : बा'ज़ लोग ज़रूरत से कुछ ज़ियादा ही होशियार होते हैं और वोह शैत़ान के झांसे में आ कर, اَلْحَمْدُ لِلّٰه, سُبْحٰنَ الله कह कर नीज़ दुआ़इया जुम्ले बोल कर **ग़ीबत** बल्कि साथ ही साथ रियाकारी के भी मुर्तकिब हो जाते हैं ! मसलन शख़्सिय्यात या अरबाबे इक़्तिदार की त़रफ़ मैलान रखने वाले किसी आदमी का तज़्किरा निकलने पर साफ़ लफ़्ज़ों में बुराई करने के बजाए कुछ इस त़रह़ बोलेंगे : اَلْحَمْدُ لِلّٰه वज़ीरों, अफ़्सरों और सरमाया दारों से अपना कोई वासित़ा नहीं, इन दुन्यादारों के आगे कौन ज़लील हो ! (यूं इनडायरेक्ट उस मख़्सूस आदमी की जो बड़े लोगों से मेलजोल रखता है **ग़ीबत** हो चुकी) या किसी की बात चलने पर उस के बारे में यूं कहेंगे : हम बे ह़याई से **अल्लाह** पाक की पनाह मांगते हैं, इलाही ख़ैर फ़रमा। यूं **ज़िक्र व दुआ़** के अन्दाज़ में किसी मख़्सूस आदमी के तज़्किरे के मौक़अ़ पर बिला इजाज़ते शरई उस के "बे ह़या" होने का इज़्हार कर के उस की **ग़ीबत** में मुब्तला हुए और बन्द लफ़्ज़ों में अपनी पारसाई (या'नी बा ह़या होने) का ए'लान कर के **रियाकारी** की तबाहकारी में जा पड़ने का ख़त़रा मोल लिया। इसी अन्दाज़ में दुआ़ ही दुआ़ के अन्दर मख़्सूस आदमियों की दीगर ख़ामियों के इनडायरेक्ट या'नी बन्द अल्फ़ाज़ में तज़्किरे कर डालते और सवाब के बजाए अ़ज़ाब के ह़क़दार बनते हैं। इसी त़रह़ बा'ज़ अवक़ात किसी की ता'रीफ़ कर के भी **ग़ीबत** की **अ़मीक़** (या'नी गहरी) खाई में जा पड़ते हैं मसलन कहेंगे : "سُبْحٰنَ الله ! फ़ुलां पक्का

नमाज़ी परहेज़ गार है, उस के अख़्लाक़ भी उ़म्दा हैं मगर बेचारा ऐसी बात में मुब्तला है जिस में हम सभी घिरे हुए हैं मेरा मत़लब है कि उस में **सब्र** की कमी है !" देखा आप ने ! शैत़ान ने किस क़दर चालाकी के साथ ता'रीफ़ करवा कर और क़ाइल की तवाज़ोअ़ और इन्किसारी ख़ुद अपनी ही ज़बानी बुलवा कर अगले को "बे सब्र" कहलवा कर **ग़ीबत** की आफ़त में फंसा दिया ! इस मिसाल को आसान अन्दाज़ में यूं समझिये जैसा कि बा'ज़ों की आ़दत होती है कि यार वोह है तो शरीफ़ आदमी मगर उस का मेरी त़रह़ दिल ज़रा छोटा है, उस को यूं तो दीन से बहुत **मह़ब्बत** है मगर मेरी त़रह़ नमाज़ों में सुस्त है, फ़ुलां आदमी अच्छा है मगर मेरी त़रह़ ठन्डा है कि इस्तिन्जा ख़ाने में जाता है तो बैठ जाता है वग़ैरा। इसी त़रह़ बा'ज़ अवक़ात किसी के ऐ़ब या उस की ख़त़ा का यूं तज़्किरा किया जाता है : "बेचारे से ग़ुस्से ही ग़ुस्से में फ़ुलां को थप्पड़ मार देने की जो भूल हुई है इस पर मुझे सख़्त अफ़्सोस है ! मैं दुआ़ करता हूं कि **अल्लाह** पाक रह़्म फ़रमाए।" इस त़रह़ **दुआ़** के अन्दाज़ में उस मुसल्मान के ग़ुस्से में आ कर ज़ुल्मन किसी को थप्पड़ जड़ देने के ऐ़ब व ख़त़ा का तज़्किरा कर डाला, और **ग़ीबत** की मुसीबत गले पड़ी। दुआ़ वाली मिसाल देने के बा'द ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **इज़्हारे अफ़्सोस** और दुआ़ में येह शख़्स **झूट** बोलता है, **दुआ़** करनी ही थी तो नमाज़ के बा'द चुपके से भी की जा सकती थी और अगर अफ़्सोस ही था तो उस की ख़त़ा का जो अब इस ने डंका बजाया इस पर भी अफ़्सोस होना

चाहिये था ! इसी त़रह़ अगर किसी के गुनाह का पता लग जाता है तो बा'ज़ नादान लोग सब के सामने इस त़रह़ कहते हैं : "बेचारा (मसलन फुलां के पैसे खुर्द बुर्द करने की) बहुत बड़ी आफ़त में फंस गया है **अल्लाह** पाक उस की और हमारी तौबा क़बूल फ़रमाए।" **येह दुआ भी ह़क़ीक़त में दुआ नहीं बल्कि ग़ीबत का एक बद तरीन अन्दाज़ है।**

(ماخوذ از: اِحیاءُ العُلوم ج۳ ص۱۷۹)

**क़ियामत का होशरुबा मन्ज़र :** ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! ग़ीबत की ह़क़ीक़त को समझने और अपनी ज़बान को क़ाबू में रखने का ज़ेह्न बनाइये, ख़ुद को क़हरे इलाही से डराइये और ज़रा **क़ियामत के होशरुबा मन्ज़र** को तसव्वुर में लाइये। **आ़शिक़ाने रसूल** की मदनी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** की किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल (1250 सफ़्ह़ात) सफ़्ह़ा 133 ता 135 के मज़्मून का ख़ुलासा है : इस वक़्त सूरज **चार हज़ार बरस** की राह पर है और इस त़रफ़ उस की पीठ है, **क़ियामत** के दिन सूरज सिर्फ़ एक मील पर होगा और उस का मुंह इस त़रफ़ होगा, भेजे खौलते होंगे और इस कसरत से पसीना निकलेगा कि सत्तर गज़ ज़मीन में जज़्ब हो जाएगा, फिर जो पसीना ज़मीन न पी सकेगी वोह ऊपर चढ़ेगा, किसी के **टख़्नों** तक होगा, किसी के **घुटनों** तक, किसी के **कमर**, किसी के **सीने**, किसी के **गले** तक, और काफ़िर के तो **मुंह** तक चढ़ कर मिस्ल लगाम के जकड़ जाएगा, जिस में वोह डुबकियां खाएगा। उस गरमी की ह़ालत में **प्यास** की जो कैफ़िय्यत होगी मोह़ताजे बयान नहीं, **ज़बानें सूख कर कांटा** हो

जाएंगी, बा'ज़ों की ज़बानें मुंह से बाहर निकल आएंगी, दिल उबल कर गले को आ जाएंगे, हर मुब्तला ब क़दरे गुनाह तक्लीफ़ में मुब्तला किया जाएगा, जिस ने **चांदी सोने** की ज़कात न दी होगी उस माल को ख़ूब गर्म कर के उस की करवट और पेशानी और पीठ पर दाग़ करेंगे, जिस ने **जानवरों** की ज़कात न दी होगी उस के जानवर क़ियामत के दिन ख़ूब तय्यार हो कर आएंगे और उस शख़्स को वहां लिटाएंगे और वोह जानवर अपने सींगों से मारते और पाउं से रौंदते उस पर गुज़रेंगे, जब सब इसी त़रह़ गुज़र जाएंगे फिर उधर से वापस आ कर यूहीं उस पर गुज़रेंगे, इसी त़रह़ करते रहेंगे, यहां तक कि लोगों का ह़िसाब ख़त्म हो। وَعَلٰى هٰذَا الْقِيَاس। फिर बा वुजूद इन मुसीबतों के कोई किसी का पुरसाने ह़ाल न होगा, भाई से भाई भागेगा, मां बाप औलाद से पीछा छुड़ाएंगे, बीबी बच्चे अलग जान चुराएंगे, हर एक अपनी अपनी मुसीबत में गिरिफ़्तार, कौन किस का मददगार होगा.....! ह़ज़रते **आदम** عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म होगा, ऐ आदम ! दोज़ख़ियों की जमाअ़त अलग कर, अ़र्ज़ करेंगे : कितने में से कितने ? इर्शाद होगा : **हर हज़ार से नव सो निनानवे,** येह वोह वक़्त होगा कि बच्चे मारे ग़म के बूढ़े हो जाएंगे, ह़म्ल वाली का ह़म्ल साक़ित़ हो जाएगा, लोग ऐसे दिखाई देंगे कि नशे में हैं, ह़ालां कि नशे में न होंगे, व लेकिन **अल्लाह** का अ़ज़ाब बहुत सख़्त है, ग़रज़ किस किस मुसीबत का बयान किया जाए, एक हो, दो2 हों, सो100 हों, हज़ार1000 हों तो कोई बयान भी करे, हज़ारहा मसाइब और वोह भी ऐसे शदीद कि अल अमां

अल अमां.....! और येह सब तक्लीफ़ें दो चार घन्टे, दो चार दिन, दो चार माह की नहीं, बल्कि क़ियामत का दिन, कि **पचास हज़ार** बरस का एक दिन होगा। (बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, स. 133 ता 135)

**लोग मुत़ालबे कर रहे होंगे : ऐ आ़शिक़ाने रसूले !** ऐसे **होशरुबा** ह़ालात में चारों जानिब से नफ़्सी नफ़्सी की आवाज़ बुलन्द होगी, हर त़रफ़ से वावेला की आवाज़ कान में पड़ेगी, दोज़ख़ सामने जोश मारती हुई होगी, हर ह़क़ वाला अपने ह़क़ का मुत़ालबा करेगा और रब्बुल इ़ज़्ज़त की ख़िदमत में नालिश (या'नी फ़रियाद) करेगा, कोई कहेगा : इस ने मेरी **ग़ीबत** की, इस ने मेरा मज़ाक़ उड़ाया, कोई बोलेगा : इस ने मुझ पर ज़ुल्म किया, कोई कहेगा : इस ने मुझे अह़मक़ कहा, कोई कहेगा : इस ने मुझे बे वुक़ूफ़ बोला, कोई पुकारेगा : इस ने मुझे क़त्ल किया, कोई फ़रियाद करेगा : इस ने मेरा क़र्ज़ा दबा लिया, कोई कह रहा होगा : इस ने मेरी किताब छुपाई, कोई कहेगा : इस ने मुझे घूर कर देखा और डरा दिया था, किसी का दा'वा होगा : इस ने मुझे बिला वज्ह झाड़ा था, कोई बोल रहा होगा : इस ने मेरा ऐ़ब खोल दिया था, कोई कहता होगा : इस ने मुझे धक्का मारा था। बहर ह़ाल तमाम अहले ह़ुक़ूक़ और जिन्हों ने ह़क़ तलफ़ किये होंगे उन को फ़िरिश्ते परवर्द गार के सामने ह़ाज़िर करेंगे, येह लोग नदामत से सर झुकाए हुए होंगे, और **अल्लाह** पाक हर एक के साथ अ़द्लो इन्साफ़ फ़रमाएगा, हर ह़क़ वाले को ख़ुश करेगा, उन लोगों

की नेकियां इन को देगा और इन की बदियां उन के सर डालेगा। फिर अगर फ़ज़्ले ख़ुदा शामिले ह़ाल हुवा तो उन की नजात हो जाएगी वरना जहन्नम में पड़े एक मुद्दत तक जलेंगे।

*शान और शौकत के होने का अ़ज़ीज़ है अ़बस अरमान आख़िर मौत है*
*ऐ़शो ग़म में साबिरो शाकिर रहे है वोही इन्सान आख़िर मौत है*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَى اللّٰه! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

**इस्लाह़ का ह़सीन अन्दाज़ : प्यारे प्यारे** मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जब किसी की बात पहुंचती जो ना गवार गुज़रती तो उस का पर्दा रखते हुए उस की **इस्लाह़ का येह ह़सीन अन्दाज़** होता कि इर्शाद फ़रमाते : مَا بَالُ اَقْوَامٍ يَقُوْلُوْنَ كَذَا وَكَذَا या'नी लोगों को क्या हो गया जो ऐसी बात कहते हैं। (سُنَنِ ابوداوٗد ج٤ ص ٣٢٩ حديث ٤٧٨٨)

**काश !** हमें भी इस्लाह़ का ढंग आ जाए, हमारा तो अक्सर ह़ाल येह होता है कि अगर किसी को समझाना भी हो तो बिला ज़रूरते शरई सब के सामने नाम ले कर या उसी की त़रफ़ देख कर इस त़रह़ समझाएंगे कि बेचारे की पोलें भी खोल कर रख देंगे। अपने ज़मीर से पूछ लीजिये कि येह समझाना हुवा या अगले को ज़लील (DEGRADE) करना हुवा ? इस त़रह़ सुधार पैदा होगा या मज़ीद बिगाड़ बढ़ेगा ? याद

रखिये ! अगर हमारे रो'ब से सामने वाला चुप हो गया या मान गया तब भी उस के दिल में ना गवारी सी रह जाएगी जो कि बुग़्ज़ो कीना **ग़ीबत** व तोहमत वग़ैरा के दरवाज़े खोल सकती है। ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे दरदा رَضِیَ اللّٰہ عَنْھَا फ़रमाती हैं : "जिस किसी ने अपने भाई को ए'लानिया नसीह़त की उस ने उसे ऐब लगाया और जिस ने चुपके से की तो उसे ज़ीनत बख़्शी।" (شُعَبُ الْإِيمان ج٦ ص١١٢ رقم٧٦٤١) अलबत्ता अगर पोशीदा नसीह़त नफ़्अ़ न दे तो फिर (मौक़अ़ और मन्सब की मुनासबत से) ए'लानिया नसीह़त करे। (تَنبِيهُ الْغافِلين ص٤٩)

**ह़ाजी मुश्ताक़ सुनहरी जालियों के रू बरू : ग़ीबत** करने सुनने की आ़दत निकालने, नमाज़ों और सुन्नतों की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों की तरबियत के लिये **मदनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, और सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा मुकम्मल शिर्कत कीजिये न जाने किस के सदक़े किस पर कब करम हो जाए ! आप की तरग़ीब के लिये एक ईमान अफ़्रोज़ **मदनी बहार** गोश गुज़ार की जाती है : एक मस्जिद के मुअज़्ज़िन साहिब ने 2004 सि.ई. में होने वाले आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के तीन दिन के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की आख़िरी निशस्त में जब **ज़िक्रुल्लाह**

शुरूअ़ हुवा तो आंखें बन्द कर के **ज़िक्रुल्लाह** में मस्त हो गए, اَلْحَمْدُ لِلّٰه उन पर बाबे करम खुल गया और उन्हों ने ख़ुद को **मक्कतुल मुकर्रमा** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में पाया। लोग जूक़ दर जूक़ त़वाफ़े ख़ानए का'बा में मश्ग़ूल थे। ज़िक्रुल्लाह के बा'द जब पुर सोज़ अन्दाज़ में **तसव्वुरे मदीना** का सिल्सिला शुरूअ़ हुवा तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه उन्हों ने ख़ुद को **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में पाया, **सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद** निगाहों के सामने था, इतने में सुनहरी जालियां जल्वे बिखेरने लगीं। वहां उन्हों ने देखा कि **दा'वते इस्लामी** की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के मर्हूम निगरान, ख़ुश इल्ह़ान ना'त ख़्वान बुलबुले रौज़ए रसूल **ह़ाजी मुश्ताक़ अ़त्तारी** رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه **सुनहरी जालियों के रू बरू** दस्त बस्ता ह़ाज़िर हैं, वोह भी हाथ बांध कर चन्द क़दम पीछे खड़ा हो गए, उन पर रिक़्क़त त़ारी थी, जज़्बात क़ाबू में न रहे और वोह दीवानगी के आ़लम में आगे बढ़ते हुए **सुनहरी जालियों** के मज़ीद क़रीब हो गए, करम बालाए करम यह हुवा कि मुबारक जालियां खुल गईं, हर त़रफ़ नूरुन अ़ला नूर हो गया, **उन का कहना है कि ख़ुदा की क़सम ! मेरी निगाहों के सामने मक्की मदनी आक़ा प्यारे प्यारे मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **जल्वा फ़रमा थे उन्हों ने मुझ गुनहगार को मुसाफ़ह़ा** (या'नी हाथ मिलाने) **की सआ़दत इनायत फ़रमाई। वल्लाह ! हाथ ऐसे मुलायम थे जिस की कोई मिसाल नहीं।**

*करम तुझ पे शाहे मदीना करेंगे तू अपना ले दिल से ज़रा मदनी माह़ोल*
*ख़ुदा के करम से दिखाएगा इक दिन तुझे जल्वए मुस्त़फ़ा मदनी माह़ोल*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

**मुक़द्दर वालों के सौदे : ऐ आ़शिक़ाने रसूल !** मुक़द्दर वालों के सौदे हैं, बस जिस पर करम हो जाए ! हम सभी को चाहिये कि जल्वए मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़सरत दिल में बढ़ाएं और तमन्नाए दीदार में अश्क बहाएं, वोह **आ़शिक़ाने रसूल** किस क़दर बख़्त बेदार हैं जो जल्वए यार से अपनी आंखें ठन्डी करते हैं, उ़श्शाक़ की भी क्या शान है,

*बहारे ख़ुल्द सदक़े हो रही है रूए आ़शिक़ पर*
*खिली जाती हैं कलियां दिल की तेरे मुस्कुराने से*

(जौक़े ना'त, स. 150)

**दीदारे मुस्त़फ़ा का वज़ीफ़ा : आ़शिक़ाने रसूल** की मदनी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के **मक्तबतुल मदीना** की किताब **"मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत"** (561 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 115 ता 116 पर है :

**अ़र्ज़ :** ह़बीबे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारते शरीफ़ा ह़ासिल होने का क्या त़रीक़ा है ?

**इर्शाद :** दुरूद शरीफ़ की कसरत शब में और सोते वक़्त के इ़लावा हर वक़्त तक्सीर (या'नी कसरत) रखे बिल ख़ुसूस इस दुरूद शरीफ़ को बा'दे इ़शा सो बार या जितनी बार पढ़ सके पढ़े

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا اَمَرْتَنَا اَنْ نُّصَلِّىَ عَلَيْهِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا هُوَ اَهْلُهٗ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَ تَرْضٰى لَهٗ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى رُوْحِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْاَرْوَاحِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى جَسَدِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْاَجْسَادِ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى قَبْرِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِى الْقُبُوْرِ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ ؕ

**हुसूले ज़ियारते अक़्दस** (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के लिये इस से **बेहतर** सीग़ा नहीं मगर ख़ालिस **ता'ज़ीमे शाने अक़्दस** (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के लिये पढ़े इस **निय्यत** को भी जगह न दे कि मुझे ज़ियारत अ़ता हो, आगे उन का **करम** बेहद व बे इन्तिहा है।

فِراق ووَصل چِہ خواہی رِضائے دوست طَلَب

کہ حَیف باشَد اَز و غیرِ اُوتمنّائی

(या'नी नज़्दीकी व दूरी से क्या मत़लब ! दोस्त की ख़ुशनूदी त़लब कर कि इस के इ़लावा दोस्त से किसी और शै की आरज़ू करना क़ाबिले अफ़्सोस है)

*जल्वए यार इधर भी कोई फैरा तेरा*

*ह़स्रतें आठ पहर तकती हैं रस्ता तेरा*

(ज़ौक़े ना'त, स. 15)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

الحمد لله رب العلمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين اما بعد فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم بسم الله الرحمن الرحيم

عزوجل و صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم

गै़र ज़रूरी गुफ़्त्गू अल्लाह व रसूल को ना पसन्द है ।

मेरी ख़्वाहिश है कि सिर्फ़ आख़िरत के फ़ाएदे की बातें करूं ।

जो चुप रहा उस ने नजात पाई ।

(अल हदीस)

(ترمذی ج4 ص225 حدیث2509)

M.R.P. ₹ 00/-

DAWAT-E-ISLAMI

Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372

Faizane Madina, Teen koniya Baghicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200

421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi

011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 *T&C Apply

feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net